भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकल्पनाएं

सम्पादक : डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन

विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001

प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
Books n Books
51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001
ई-मेल : bnbajmer@gmail.com

संस्करण
प्रथम 2025

ISBN : 978 - 81 - 993854 - 7 - 4

मूल्य - 300/-

रचना -
भारतीय संस्कृति, शिक्षा और दर्शन विभिन्न संकल्पनाएँ

सम्पादक -
डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा

आवरण -
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

मुद्रक -
श्री श्याम ऑफसेट, किशनगढ़

राजस्थान के संगीत घराने

सुश्री श्वेता त्रिवेदी
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

राजस्थान भारतीय संस्कृति और कला का एक ऐसा केंद्र है, जिसकी परंपराएँ सदियों पुरानी हैं। यह प्रदेश केवल अपने किलों, महलों, राजसी परंपराओं और वीर गाथाओं के लिए ही नहीं प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी संगीत संस्कृति भी उतनी ही समृद्ध और गौरवपूर्ण है। राजस्थान का संगीत सदियों से समाज, धर्म और मनोरंजन का माध्यम रहा है। इसके संगीत घराने समय के साथ विकसित होते रहे और उन्होंने शास्त्रीय और लोक संगीत की विविधता को संरक्षित किया। राजस्थान के संगीत घरानों का इतिहास राजसी संरक्षण, धार्मिक आयोजनों और लोक उत्सवों के माध्यम से उभरकर आया है।

राजस्थान के संगीत घराने शास्त्रीय और लोक संगीत दोनों में अद्वितीय योगदान करते हैं। शास्त्रीय संगीत मुख्यत: दरबारों और मंदिरों में विकसित हुआ, जहां राग, ताल और स्वर की शुद्धता का विशेष ध्यान रखा गया। वहीं लोक संगीत राजस्थान की ग्रामीण जीवनशैली, त्योहारों और मेलों का जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है। राजस्थान के संगीत में शास्त्रीय और लोक संगीत का मेल इसे विशेष बनाता है। यहां के संगीत घरानों ने पीढ़ियों तक संगीत की परंपरा को संरक्षित किया, उसे विकसित किया और नई पीढ़ियों तक पहुंचाया।

जयपुर घराना (आत्रौली घराना)

जयपुर घराना आत्रौली घराना शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसकी स्थापना उस्ताद अल्लादीया खान ने की थी, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत के महान गायक थे। इस घराने का इतिहास जयपुर रियासत के दरबार से जुड़ा हुआ है, जहां कलाकारों ने संगीत शिक्षा को संरक्षित किया और शास्त्रीय संगीत के विभिन्न तत्वों को आगे बढ़ाया। जयपुर घराने के कलाकारों ने संगीत में तकनीकी उत्कृष्टता और भावपूर्ण प्रस्तुति का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत किया, जिससे श्रोताओं पर गहरा प्रभाव पड़ा।

जयपुर नरेश सवाई प्रताप सिंह के दरबार में बाईस प्रसिद्ध संगीतज्ञों एवं विद्वानों की मंडली 'गंधर्व बाईसी' थी। देवर्षि द्वारकानाथ भट्ट, ब्रजपाल भट्ट, चाँद खाँ, गणपत भारती आदि इनके प्रसिद्ध दरबारी संगीतज्ञ थे। वे स्वयं भी 'ब्रजनिधि' उपनाम से काव्य रचना करते थे।

जयपुर घरानों की संगीत शैलियाँ एवं कलाकार

जयपुर घराने की सबसे प्रमुख शैली ख्याल गायन है। इस शैली में रागों को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया जाता है और संगीतकार स्वर के विभिन्न आयामों को भावनात्मक रूप में प्रकट करता है। ख्याल गायन में अलाप, तान और अंतरा के माध्यम से राग का पूर्ण अनुभव प्रदान किया जाता है। जयपुर घराने की ख्याल शैली में रागों का निरूपण अत्यंत सूक्ष्म और जटिल होता है। यहां कलाकार राग की मधुरता, स्वर की शुद्धता और ताल की सटीकता के माध्यम से श्रोताओं पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

ठुमरी और दादरा भी जयपुर घराने की प्रमुख शैलियों में शामिल हैं। ठुमरी में प्रेम, भक्ति और राग का मिश्रण होता है। जयपुर घराने के कलाकार ठुमरी को अपनी विशिष्ट शैली में प्रस्तुत करते हैं, जिसमें भावनाओं की गहराई और लय की सजीवता देखने को मिलती है। दादरा शैली में ताल और लय का विशेष महत्व होता है और इसे प्रस्तुत करने के लिए उच्च तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है। जयपुर घराने के कलाकार इन शैलियों में अद्भुत दक्षता रखते हैं और उन्हें भावनात्मक रूप से प्रस्तुत करते हैं।

जयपुर घराने की संगीत शैलियों में '**तराना और टुकड़ा**' का भी महत्वपूर्ण स्थान है। तराना में बोल और स्वरों का अद्वितीय संयोजन होता है, जो राग की सजीवता को बढ़ाता है। टुकड़ा शैली में संगीतकार तानों और अलापों के माध्यम से राग को संपूर्ण रूप में प्रस्तुत करता है।

इन घरानों में जयपुर, पटियाला, अतरौली, डागर, मेवाती और जयपुर-अतरौली (अल्लादिया खाँ) घराने प्रमुख माने जाते हैं। प्रत्येक घराना अपने स्वरूप में अद्वितीय है और उसके कलाकारों ने संगीत की नई-नई परंपराएँ स्थापित कीं।

जयपुर घराने की स्थापना मनरंग भूपत खाँ ने की। वे दिल्ली घराने के प्रवर्तक सदरंग खाँ के पुत्र थे। इस प्रकार जयपुर घराना दिल्ली की परंपरा से जुड़ा हुआ है, परन्तु समय के साथ इसने अपनी एक विशिष्ट खयाल गायन शैली विकसित की।

जयपुर घराने की विशेषता इसकी खयाल गायन शैली है। इसमें राग की शुद्धता, आलाप का गंभीरता से विस्तार और तानों का संयमित प्रयोग प्रमुख माना जाता है। मोहम्मद अली खाँ कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए, जिन्होंने इसे दरबारी संरक्षण और जनमानस दोनों तक पहुँचाया।

जयपुर घराने की परंपरा का प्रभाव इतना गहरा था कि बाद में इसकी दो प्रमुख उपशाखाएँ भी विकसित हुईं—पटियाला और अतरौली।

पटियाला घराना :- पटियाला घराना मूलतः जयपुर की परंपरा से जुड़ा हुआ है। इस घराने के प्रमुख संगीतकार फतेह अली खाँ और अली बख्श खाँ थे। ये दोनों कलाकार टोंक के नवाब इब्राहीम के दरबार से जुड़े रहे। पटियाला घराने की खासियत

इसकी लचकदार तानें, बलखती हुई स्वरपद्धति और तराना गायन की अद्‌भुत शैली है। इस घराने ने खयाल गायन को एक नई चमक और आकर्षण दिया। इस घराने के कलाकार स्वर को लहरियों और तानों के माध्यम से जीवंत बना देते हैं।

आधुनिक काल में इस घराने का नाम विश्व-भर में तब फैला जब गुलाम अली, जो गजल गायन के लिए प्रसिद्ध हैं, इस घराने से जुड़े। गुलाम अली ने गजल गायन को शास्त्रीय संगीत की नींव पर खड़ा कर दिया और आज भी उनका नाम पटियाला घराने की पहचान है।

अतरौली घराना :- अतरौली घराने की जड़ें ध्रुपद परंपरा में निहित हैं। इस घराने के प्रमुख संगीतकार साहेब खाँ थे, जो ध्रुपद की खंडारवाणी शैली के महान गायक माने जाते हैं। अतरौली घराना अपनी गंभीरता और राग की स्थिरता के लिए प्रसिद्ध है। इस घराने से जुड़े मनतौल खाँ को 'रुलाने वाले फकीर' के नाम से जाना जाता था, क्योंकि उनके गायन में ऐसी भावनात्मक शक्ति थी कि श्रोता अनायास ही भावविभोर होकर रो पड़ते थे। अतरौली घराने के एक अन्य महान गायक हरीसिंह के बारे में लोककथा प्रचलित है कि उन्होंने अपने गायन की शक्ति से एक राग गाकर पत्थर तक पिघला दिया था।

डागर घराना :- डागर घराना ध्रुपद परंपरा का सबसे प्रतिष्ठित घराना माना जाता है। इसके आदि पुरुष बाबा गोपाल दास थे, जिन्हें 'इमाम बख्श' भी कहा जाता है। परन्तु इस घराने का वास्तविक संस्थापक बहराम खाँ डागर था, जो जयपुर के महाराजा रामसिंह का दरबारी गायक था। डागर घराने की सबसे बड़ी देन ध्रुपद में 'जुगलबंदी' की परंपरा है। अमीनुद्दीन खाँ, जहीरुद्दीन खाँ और फैयाजुद्दीन खाँ जैसे कलाकारों ने मिलकर ध्रुपद जुगलबंदी को नया रूप दिया और इसे पूरी दुनिया में प्रसिद्ध किया। इस घराने की गायन शैली को डागुर वाणी कहा जाता है।

मेवाती घराना :- मेवाती घराने की स्थापना घग्घे नजीर खाँ ने की। यह घराना ग्वालियर घराने की शाखा माना जाता है, परन्तु समय के साथ इसकी अपनी स्वतंत्र पहचान बनी। मेवाती घराना भावप्रधानता के लिए जाना जाता है। इस घराने में राग की प्रस्तुति केवल तकनीकी निपुणता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसमें गहरी भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभूति भी झलकती है। आधुनिक काल में पंडित जसराज ने इस घराने को वैश्विक पहचान दिलाई। उनकी रचनाओं में ओडव बागेश्वरी, ज्योति मोती, जयंती टोडी और बदिन की पुरिया जैसे रागों की प्रयोगशीलता दिखाई देती है। पंडित जसराज का गायन भक्तिरस और भावविभोरता से परिपूर्ण रहा, जिसने मेवाती घराने को विशेष प्रतिष्ठा दिलाई।

अल्लादिया खाँ घराना (जयपुर-अतरौली घराना) :- इस घराने की स्थापना अल्लादिया खाँ ने की। वे ध्रुपद की गोहर वाणी और खंडार वाणी के ज्ञाता थे। इस घराने

ने ध्रुपद और खयाल दोनों परंपराओं को नया आयाम दिया। इस घराने की सबसे बड़ी पहचान है—रागों की अनूठी और दुर्लभ प्रस्तुति। अल्लादिया खाँ ने कई ऐसे रागों की रचना और विकास किया, जो अन्य घरानों में प्रचलित नहीं थे। आधुनिक समय में इस घराने की महान गायिका किशोरी आमोनकर ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को भावनात्मक गहराई और सौंदयज़ प्रदान किया। उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया और वे इस घराने की सर्वोच्च विभूतियों में गिनी जाती हैं।

जयपुर घराने के अन्य प्रमुख कलाकारों में केसरबाई केरकर, जिन्होंने ख्याल गायन में अद्वितीय शैली प्रस्तुत की विशेष उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त, मोगुबाई कुर्दीकर और मालिकार्जुन मंसूर जैसे कलाकारों ने भी जयपुर घराने की शास्त्रीय शैली को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

उदयपुर घराना

उदयपुर घराना भक्ति और शास्त्रीय संगीत का अद्वितीय मिश्रण प्रस्तुत करता है। उदयपुर रियासत में विकसित यह घराना भजन, भक्ति गीत और शास्त्रीय संगीत की मिश्रित शैली के लिए जाना जाता है। उदयपुर घराने के कलाकार संगीत के माध्यम से केवल मनोरंजन नहीं करते थे, बल्कि श्रोताओं में आध्यात्मिक अनुभूति और मानसिक स्थिरता का संचार करते थे। इस घराने की विशेषता यह है कि संगीत के माध्यम से व्यक्ति के भावनात्मक और आध्यात्मिक पक्ष को गहराई से प्रभावित किया जाता है।

महाराणा प्रताप और संगीत परंपरा :- यद्यपि महाराणा प्रताप स्वयं मुख्यत: वीरता और युद्धनीति के लिए प्रसिद्ध हैं, किंतु उनके शासनकाल में संगीत और कलाओं को संरक्षण प्राप्त हुआ। उनकी वीरगाथाओं और पराक्रम को भक्ति संगीत और लोकगीतों में पिरोया गया, जिसने उदयपुर की संगीत संस्कृति को बल दिया।

महाराणा उदयसिंह और दरबारी संगीत :- उदयपुर नगर की स्थापना करने वाले महाराणा उदयसिंह के समय से ही संगीत को शाही दरबार में विशेष स्थान प्राप्त हुआ। दरबारी संगीतकारों ने शास्त्रीय रागों की साधना को आगे बढ़ाया। उन्होंने मंदिर संगीत, दरबारी गायन और भक्ति गीतों का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया।

मीरा बाई का योगदान :- यदि उदयपुर घराने की संगीत परंपरा की बात की जाए और मीरा बाई का नाम न लिया जाए, तो वह अधूरी मानी जाएगी। मीरा बाई ने कृष्ण भक्ति को संगीत और कविता का माध्यम बनाकर जन-जन तक पहुँचाया। उनके भजनों में भाव और संगीत का ऐसा अद्भुत सम्मिश्रण है, जो आज भी उदयपुर घराने की आत्मा माना जाता है। उनकी रचनाओं ने उदयपुर घराने को भक्ति संगीत की दिशा में गहराई और व्यापकता प्रदान की।

दरबारी संगीतज्ञ और गायक-वादक :- उदयपुर दरबार में अनेक कुशल गायक और वादक पनपे। इनमें से कुछ कलाकार ध्रुपद गायन में प्रवीण थे, जो राजस्थान

की शास्त्रीय परंपरा का अभिन्न हिस्सा है। ध्रुपद शैली में राग की गंभीरता और भाव की गहराई को विशेष महत्व दिया जाता था। इसके साथ ही, पखावज और तबला वादन की विशेष परंपरा भी उदयपुर घराने से जुड़ी रही।

उदयपुर की भूमि पर केवल दरबारी कलाकार ही नहीं, बल्कि लोक कलाकारों का भी विशेष योगदान रहा है। इन लोक कलाकारों ने शास्त्रीय परंपरा को लोकगीतों और लोकनृत्यों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया। उदयपुर घराने के भक्ति गीतों और लोक रागों में इस संगम की छाप आज भी स्पष्ट दिखाई देती है।

जोधपुर घराना

जोधपुर घराने का संगीत शास्त्रीय ख्याल और गजल शैली के क्षेत्र में विशिष्ट माना जाता है। जोधपुर के दरबारों में विकसित इस घराने ने शास्त्रीय संगीत की शुद्धता और भावपूर्ण प्रस्तुति को बनाए रखा। जोधपुर घराने के कलाकार रागों की जटिलताओं को सहजता से प्रस्तुत करते थे और उनकी प्रस्तुतियाँ श्रोताओं को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करती थीं। यह घराना शास्त्रीय संगीत में तकनीकी उत्कृष्टता के साथ-साथ भाव की गहनता के लिए प्रसिद्ध रहा। यह घराना मुख्यत: ध्रुपद, खयाल, भक्ति संगीत, लोकसंगीत और दरबारी संगीत की परंपरा से जुड़ा रहा है।

जोधपुर राज्य के शासक राजा मानसिंह (16वीं शताब्दी) संगीत और कला के बड़े संरक्षक माने जाते हैं। उनके दरबार में अनेक ध्रुपद गायक और वादक रहते थे। राजा मानसिंह ने संगीतकारों को संरक्षण देकर जोधपुर घराने की नींव मजबूत की।

जोधपुर की सांगीतिक संस्कृति नागौर और मंडोर के प्राचीन संगीतज्ञों से भी जुड़ी रही। इन क्षेत्रों के कलाकार ध्रुपद और लोकसंगीत दोनों में प्रवीण थे। जोधपुर घराने की पहचान विशेष रूप से ध्रुपद गायन से जुड़ी है। ध्रुपद की परंपरा में पखावज वादन का विशेष महत्व रहा है, और जोधपुर के पखावज वादक पूरे भारत में प्रसिद्ध हुए।

ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं कि तानसेन की परंपरा के गायक जोधपुर दरबार में आमंत्रित किए गए। उनके शिष्यों ने जोधपुर घराने को शास्त्रीय संगीत की गहराई और निखार प्रदान किया। इस परंपरा ने जोधपुर के संगीत को ग्वालियर और दिल्ली घरानों से जोड़कर उसकी विशिष्टता बनाए रखी।

जोधपुर घराने का एक महत्वपूर्ण पक्ष भक्ति संगीत है। यहाँ के कलाकारों ने कबीर, मीरा, सूर और स्थानीय संत कवियों के पदों को राग आधारित भक्ति शैली में प्रस्तुत किया। इन प्रस्तुतियों में शास्त्रीय अनुशासन के साथ-साथ लोकधुनों का भी सुंदर मेल दिखाई देता है। इसके अलावा, लंगा और मंगनियार समुदाय के कलाकारों ने भी जोधपुर की संगीत परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनके गीत आज भी जोधपुर घराने की आत्मा माने जाते हैं।

जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह कला और संस्कृति के महान संरक्षक माने जाते

हैं। उनके दरबार में शास्त्रीय संगीत, भक्ति गीत और लोकनृत्यों को विशेष संरक्षण मिला। इसी काल में जोधपुर घराने के कलाकारों ने कई राग-रागिनियों की रचना और प्रस्तुति की।

बीकानेर घराना

बीकानेर घराने ने भजन और रासलीला संगीत में विशेष पहचान बनाई। बीकानेर रियासत के संरक्षण में विकसित इस घराने ने लोक और शास्त्रीय संगीत का अनूठा संगम प्रस्तुत किया। बीकानेर घराने के संगीत में राग और ताल का संयोजन, भाव और लय की विशेषता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस घराने के कलाकार संगीत के माध्यम से भक्ति, नैतिक शिक्षा और सामाजिक चेतना का प्रचार करते थे।

बीकानेर राज्य में संगीत का संरक्षण राव बीका (बीकानेर राज्य के संस्थापक) के समय से मिलता है। बीकानेर के राजदरबार में ध्रुपद, धमार और भक्ति संगीत को विशेष महत्व दिया जाता था। यहाँ की संगीत परंपरा का संबंध डागर घराने और आंशिक रूप से ग्वालियर घराने से भी माना जाता है। यहाँ की शैली में राजस्थान के मांड, पध, केहरवा और चकरी जैसे लोकतालों का प्रभाव भी देखने को मिलता है।

बीकानेर घराने के प्रमुख कलाकार -पंडित भंवरलाल (भंवरजी) बीकानेर की परंपरा में ध्रुपद गायन के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। पंडित नन्दलालजी दरबारी गायक रहे, जिनके ध्रुपद और धमार प्रस्तुतियाँ प्रसिद्ध थीं। पंडित लक्ष्मणदासजी आलाप और भावप्रधान प्रस्तुति के लिए प्रसिद्ध।

मेवाड़ घराना

मेवाड़ घराने का योगदान शास्त्रीय और लोक संगीत के मिश्रण में अद्वितीय है। मेवाड़ के कलाकारों ने शाही दरबारों में शास्त्रीय संगीत का संरक्षण किया और ग्रामीण जीवन के लोक गीतों को संजोकर रखा। मेवाड़ घराने की संगीत शैली में राग और ताल का अनूठा मिश्रण और भावनाओं की गहराई देखने को मिलती है। यह घराना संगीत को केवल कलात्मक प्रदशज़्न नहीं मानता, बल्कि इसे सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का माध्यम मानता है।

मेवाड़ के राजवंश (विशेषत: महाराणा कुम्भा और महाराणा प्रताप) कला एवं संगीत संरक्षण के लिए प्रसिद्ध थे। 15वीं शताब्दी में महाराणा कुम्भा ने संगीत पर विशेष कार्य किया। उन्होंने 'संगीतराज' और 'संगीतमिमांसा' जैसे ग्रंथों की रचना की। दरबार में ध्रुपद, धमार और मंदिर संगीत का विशेष विकास हुआ। मेवाड़ का संगीत घराना राजदरबार की परंपरा के साथ-साथ मंदिरों और संत परंपरा से भी जुड़ा रहा।

इस घराने में ध्रुपद गायकी का गहरा प्रभाव रहा। ग्वालियर और डागर घराने से संपर्क होने के कारण इसकी शैली में गाम्भीर्य और विस्तार दिखाई देता है। उदयपुर के

एकलिंगजी और श्रीनाथजी मंदिरों में प्रात:, संध्या और उत्सव अवसरों पर ध्रुपद और भक्ति गीत गाए जाते थे। यह परंपरा मेवाड़ संगीत घराने की आत्मा मानी जाती है। मेवाड़ की लोकशैली, जैसे मांड, पध और केहरवा ताल, शास्त्रीय संगीत के साथ जुड़कर इसे एक अलग पहचान देती है। रुद्रवीणा, पखावज और सितार जैसे वाद्यों का भी मेवाड़ दरबार में भरपूर प्रयोग होता था।

मेवाड़ घराने के प्रमुख कलाकार-

महाराणा कुम्भा :- ये केवल शासक ही नहीं, बल्कि संगीतज्ञ और संगीतशास्त्रकार भी थे। उन्होंने संगीतराज और संगीतमिमांसा जैसे ग्रंथ लिखे। उनकी रचनाओं से मेवाड़ संगीत परंपरा की नींव पड़ी। महाराणा कुम्भा की पुत्री रमाबाई संगीत शास्त्र की ज्ञाता थी।

मीरा बाई :- भक्ति और संगीत की सबसे बड़ी विभूति। यद्यपि मीरा संत कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हैं, लेकिन उनकी भजनों की संगीतमय शैली ने मेवाड़ संगीत परंपरा को लोक और भक्ति धारा से जोड़ा।

तानसेन :- अकबर के दरबारी संगीतज्ञ तानसेन का संबंध भी प्रारंभ में ग्वालियर और मेवाड़ की संगीत परंपरा से रहा।

आधुनिक समय के कलाकारों में उदयपुर और नाथद्वारा परंपरा से जुड़े अनेक गायक-वादक, जैसे पंडित लालजी व्यास, रामकिशोरजी और मंदिरों में सेवारत हवेली संगीत के गायक इस परंपरा को जीवित रखे हुए हैं।

कालबेलिया घराना

राजस्थान के लोक संगीत घराने भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। कालबेलिया घराना अपनी विशिष्ट नृत्य शैली और साँपवादन संगीत के लिए प्रसिद्ध है। कालबेलिया घराने की प्रस्तुतियों में गतिशीलता, लय और भावनात्मक अभिव्यक्ति का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है। यह घराना संगीत और नृत्य के माध्यम से राजस्थान की ग्रामीण संस्कृति और जीवनशैली का चित्र प्रस्तुत करता है।

यह शास्त्रीय घरानों (जैसे जयपुर, मेवाती, डागर) की तरह ख्याल या ध्रुपद पर आधारित घराना नहीं है, बल्कि इसे लोकपरंपरा से विकसित लोकसंगीत घराना कहा जाता है। इसकी पहचान मुख्यत: कालबेलिया नृत्य और गीत से है, जिसे विश्व स्तर पर मान्यता मिली है।

कालबेलिया जाति मूलत: साँप पकड़ने और उनका विष निकालने के कार्य के लिए प्रसिद्ध थी। समय के साथ जब यह परंपरा कमजोर पड़ी, तो इस समुदाय ने अपने लोकसंगीत और नृत्य को अपनी पहचान बनाया। आज कालबेलिया गीत और नृत्य राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बन चुके हैं। यूनेस्को ने 2010 में कालबेलिया

नृत्य और गीत को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत घोषित किया।

कालबेलिया नृत्य :- इसे अक्सर साँपों का नृत्य कहा जाता है, क्योंकि इसकी लय, घूम और भाव-भंगिमा नागिन के लहराते हुए नृत्य जैसी प्रतीत होती है। महिलाएँ काले घाघरे-चोली में, जिन पर चाँदी या रंगीन गोटे का काम होता है, विशेष परिधान पहनती हैं। घूमने, लहराने और लचकने की गतियाँ इसकी पहचान हैं।

संगीत शैली :- ढोलक, खानजरी, खंजरी, पखावज, मंजीरा, डफली और बीन (पुंगी) का प्रयोग होता है। गीतों में लोककथाएँ, प्रेमगीत, वीरगाथाएँ और सामाजिक जीवन के प्रसंग शामिल होते हैं। धुनें प्राय: तेज लय और मधुर आलापों पर आधारित होती हैं।

कालबेलिया घराने के प्रमुख कलाकार पं. रामचंद्र हेगड़े और पं. शंकर काबाड़ी शामिल हैं। अन्य कलाकार-

गुलाबो सपेरा (गुलाबो कालबेलिया) :- कालबेलिया नृत्य को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने वाली प्रसिद्ध नृत्यांगना है। उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया। इन्होंने यूरोप और अमेरिका तक कालबेलिया को पहुँचाया।

सपना सपेरा :- गुलाबो की शिष्या और कालबेलिया नृत्य की प्रसिद्ध कलाकार। मंचीय प्रस्तुतियों और अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में ख्याति अर्जित की।

कलान देवी :- लोकगायन और कालबेलिया गीतों के लिए प्रसिद्ध। इन्हें भी राजस्थान की लोकपरंपरा को जीवित रखने के लिए कई सम्मान प्राप्त हुए।

कालबेलिया लोकदल के अन्य कलाकारों में कई पुरुष कलाकार बीन, ढोलक और मंजीरा बजाकर इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। इनमें मानगू खान, बबलू खान, रूमालिया खान जैसे कलाकार उल्लेखनीय हैं।

भोपा घराने

भोपा घराने ने राजस्थान में वीर रस और गाथा संगीत को जीवित रखा। भोपा घराने के गीत महाकाव्यों, रामायण और महाभारत की कथाओं पर आधारित होते हैं। ये गीत श्रोताओं में साहस, वीरता और नैतिक मूल्यों की भावना उत्पन्न करते हैं। लोहड़ी और रोली घराने राजस्थान के त्योहारों और सामूहिक उत्सवों में संगीत का संरक्षण करते हैं। इनके गीत राजस्थान की सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता का परिचय देते हैं और समाज में उत्सव और आनंद की भावना का संचार करते हैं।

'भोपा' शब्द का अर्थ है- गायक या भाट, जो देवी-देवताओं, वीर नायकों और लोकदेवताओं की स्तुतियाँ गाकर उनका कीर्तन करते हैं। यह परंपरा मुख्यत: भीलवाड़ा, चित्तौड़, बूंदी, कोटा और मेवाड़ क्षेत्र में पाई जाती है। भोपा गायक अक्सर अपनी पत्नी के साथ होते हैं। भोपा पुरुष गायक, जो 'रावणहथा' नामक वाद्य बजाता है। यह एक प्राचीन तंतुवाद्य है, जो सारंगी जैसा होता है। भोपा इसी वाद्य के साथ अपने गीत गाते हैं।

भोपी स्त्री गायिका, जो साथ में गाती है और नृत्य की भूमिका भी निभाती है। भोपा परंपरा का सबसे बड़ा केंद्र है देवता पाबूजी की कथा गायन है।

भोपा घराने के प्रमुख कलाकार–

पाबूजी के भोपा – यह सबसे प्रसिद्ध समूह है, जो पाबूजी की फड़ गाते हैं।

जमाल भोपा – भीलवाड़ा जिले के प्रसिद्ध भोपा कलाकार, जिन्होंने रावणहथा वादन को लोकप्रिय बनाया।

लादूराम भोपा – राजस्थान की भोपा परंपरा के वरिष्ठ गायक, जिन्हें राज्य स्तरीय पुरस्कार मिले।

जमरू भोपा और उनके परिवार – पाबूजी और देव नारायण की फड़ गाने वाले प्रसिद्ध लोक कलाकार।

भोपी कलाकार – जैसे जमरू भोपा की पत्नी लक्ष्मी भोपी और अन्य महिलाएँ, जिन्होंने इस लोकपरंपरा को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया।

राजस्थान के संगीत घरानों ने संगीत की उत्कृष्टता के साथ-साथ समाज और संस्कृति के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शास्त्रीय घराने संगीत की शुद्धता और तकनीकी श्रेष्ठता के प्रतीक हैं, जबकि लोक घराने ग्रामीण जीवन, उत्सव और सामाजिक चेतना को जीवंत रखते हैं। इन घरानों ने संगीत को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित किया और आधुनिक समय में भी संगीत शिक्षा, प्रशिक्षण और प्रदर्शन के माध्यम से इसे विकसित किया।

आज राजस्थान के संगीत घराने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त कर चुके हैं। जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर और मेवाड़ के घराने शास्त्रीय संगीत के संरक्षक हैं, जबकि कालबेलिया, भोपा और रोली घराने लोक संस्कृति और उत्सवों के जीवंत प्रहरी हैं। इन घरानों ने संगीत को केवल कला नहीं, बल्कि जीवन शैली, व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक चेतना का माध्यम बना दिया है।

राजस्थान के संगीत घराने केवल संगीत की परंपरा के संरक्षक नहीं हैं, बल्कि यह समाज और संस्कृति की आत्मा के प्रतीक हैं। इन घरानों ने संगीत के माध्यम से राजस्थान की ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को संजोकर रखा है।

आज के समय में, राजस्थान के संगीत घरानों का महत्व और भी बढ़ गया है। राजस्थान अंतर्राष्ट्रीय लोक महोत्सव जैसे आयोजनों के माध्यम से इन घरानों के कलाकारों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया जा रहा है। इन आयोजनों में मेघवाल, मांगणियार और लंगा जैसे समुदायों के कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, जो भारतीय संगीत की समृद्ध परंपरा को जीवित रखते हैं।

❑❑❑